भविष्य के लिए तैयार विद्यार्थी

अमिता वट्टल

वैश्विक महामारी के कारण जीवन जीने के तरीक़े में एक बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया है- इसने आजीविका, स्वास्थ्य और रिश्तों को तो प्रभावित किया ही है लेकिन शिक्षा पर इसका सबसे अधिक प्रभाव पड़ा है। परिणामस्वरूप बच्चे बहुत जल्दी बड़े हो गए हैं और रोज़मर्रा के जीवन की गतिविधियों में सामाजिक अन्तःक्रिया, रचनात्मक खेल और प्रकृति के बुनियादी अनुभवों को खो बैठे हैं। इनकी जगह स्क्रीन-टाइम ने ले ली है, जिसके चलते इन बच्चों के विकास से समझौता किया जा रहा है।

जब यह वास्तविकता समझ में आ गई कि निकट भविष्य में स्कूल नहीं खुलेंगे तो वर्ष की पहली तिमाही में अधिगम के लिए ऑनलाइन विधा का प्रयोग किया गया। यह तरीक़ा प्रत्येक शिक्षक की क्षमताओं पर निर्भर था क्योंकि प्रमाणन का कोई मॉडल हमारे सामने नहीं था।

एक समग्र दृष्टिकोण

ज्ञान निर्मित करने और विभिन्न अभ्यासों के निर्माण में विभिन्न सहयोगी दृष्टिकोणों के साथ प्रयोग किए गए। विद्यार्थियों ने पुष्टीकरण, चर्चा, विचारों को साझा करने, संसाधनों के एकाधिक विश्लेषण और शिक्षक के फ़ीडबैक के माध्यम से अपने स्वयं के ज्ञान का निर्माण किया।

एक ऐसे मंच का निर्माण हुआ जहाँ विद्यार्थियों ने अनुभव साझा किए, सिद्धान्तों व चुनौतियों पर चर्चा की और एक-दूसरे से सीखा। अब शिक्षकों पर ज्ञान प्रदान करने या सीखने के लिए संसाधन जुटाने की ज़िम्मेदारी नहीं थी, वरन अब वे सीखने के लिए एक मार्गदर्शक, सुगमकर्ता और आकलनकर्ता की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे। इस सहयोगात्मक वातावरण में ऑनलाइन कक्षाएँ अधिक सक्रिय हो गईं। विद्यार्थियों ने चर्चाओं, अनुस्तरण और शोध की सहायता से परियोजनाएँ बनाईं। शिक्षण वस्तुनिष्ठ था, व्यक्तिनिष्ठ नहीं। ऑनलाइन कक्षाएँ प्रतिस्पर्धी नहीं हैं क्योंकि प्रत्येक बच्चा स्वयं के लिए विषयवस्तु और अध्ययन की विधि को चुनता है।

समकालिक और असमकालिक अधिगम (Synchronous & Asynchronous Learning)

अधिगम दो स्तरों पर शुरू हुआ : *समकालिक और असमकालिक। असमकालिक* विधा में विद्यार्थियों ने पढ़कर और शिक्षकों के साथ साझा करके स्वयं अपनी परियोजनाएँ बनाईं। इसने ऑनलाइन क्विज़ और डेटा के ऑनलाइन स्टिमुलेशन का रूप लिया।

समकालिक विधा में वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग और साझा किए गए ऑनलाइन व्हाइटबोर्ड के माध्यम से चर्चा और प्रश्नों के स्पष्टीकरण किए गए। पॉडकास्ट और वेब चैट के माध्यम से विभिन्न विषयों (जैसे कि स्थायित्व [sustainability], सामाजिक भावनात्मक अधिगम, साइबर सुरक्षा, प्रतिरक्षा, स्वास्थ्य, सचेतनता, कला और पर्यावरण आदि) पर अपने अनुभवों को साझा करने के लिए विभिन्न विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया।

इस पद्धति ने एक अन्त: विषयक दृष्टिकोण बनाने में मदद की। शोध,100-पृष्ठ परियोजनाओं, प्रक्रिया-पुस्तकों, परियोजनाओं की पृष्ठभूमि के दस्तावेज़ीकरण, पोर्टफोलियो, स्व-निर्मित फ़िल्मों और वीडियो आदि के माध्यम से अधिगम अभिनव, अनुभवजन्य और आत्म-उन्मुख हो गया। इस माध्यम से, बच्चों ने ख़ुद अपना ज्ञान प्राप्त किया।

ऑनलाइन डिलीवरी के तरीक़े

समुदाय के प्रति प्रतिबद्धता

स्प्रिंगडेल्स स्कूल में अधिगम विभिन्न स्तरों पर किया जाता है क्योंकि हमारी कक्षाओं में एक विविधतापूर्ण समुदाय है। पिछले 40 वर्षों से स्कूल की संस्कृति यही रही है कि आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्गों के बच्चों को स्कूल में लाया जाए। निम्न आय-वर्ग के लगभग 800 विद्यार्थी हैं जो स्कूल की अलग-अलग कक्षाओं में पढ़ते हैं। इन्हें वही सुविधाएँ दी जाती हैं जो सुविधा-सम्पन्न पृष्ठभूमि से आए विद्यार्थियों को प्रदान की जाती हैं।

हमारे सामाजिक कार्यकर्ताओं और परामर्शदाताओं ने यह जानने के लिए टेलीफ़ोनिक सर्वेक्षण किया कि बच्चों के पास ऑनलाइन कक्षाओं के लिए फ़ोन या टैबलेट थे या नहीं। स्टाफ़ और पूर्व विद्यार्थियों ने धन-संग्रह कार्यक्रम के माध्यम से बच्चों को फ़ोन और टैबलेट दिलवाए। साथ ही उनके ब्रॉडबैंड कनेक्शन का भुगतान भी किया – इस शर्त के साथ कि उनके माता-पिता इन उपकरणों का उपयोग नहीं करेंगे।

उपस्थिति

कक्षाओं में प्रतिदिन उपस्थिति की जाँच की गई। बच्चों की अनुपस्थिति पर तुरन्त कार्रवाई हुई, सूचना दी गई और परामर्शदाताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, सुपरवाइज़रों और यहाँ तक कि प्रधानाचार्य ने भी बच्चों के घरों में फ़ोन किए।

अधिगम के साधन के रूप में नए उपकरण

छोटे समूहों में सहयोग और चर्चाओं के लिए ब्रेकआउट रूम बनाए गए थे, ताकि दोपहर को, आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग के बच्चों के अधिगम में उनकी मदद की जा सके। परियोजना, फ़िल्म, वीडियो और रिसर्च मॉड्यूल बनाने में उनकी मदद की गई। ब्रेकआउट कमरों में बच्चों की सहायता करने के लिए शिक्षकों के साथ-साथ उनके साथी भी मेंटर (Mentor) के रूप में मौजूद रहते थे। इन सत्रों के अलावा हर शाम को मार्गदर्शन और शंका-निवारण के लिए वैयक्तिक रूप से बातचीत करने के लिए टेलिफ़ोनिक हेल्पलाइन बनाई गई थी।

आकलन

विषयों के लिए अंक निर्धारित नहीं किए गए थे, केवल ग्रेड दिए गए थे। अधिगम की चरणवार उत्तरोत्तर प्रगति को मापने के लिए विकास सोपान रूब्रिक्स (Growth Ladder Rubrics) आकलन का उपकरण बन गया। विद्यार्थियों ने अपनी कल्पना और मौलिकता से सार्थक एवं नए विचारों का निर्माण किया, सूचनाओं को सम्प्रेषित करने, बनाने और उन तक पहुँचने के लिए कई तकनीकों का उपयोग करके डिजिटल साक्षरता को समझा। विद्यार्थी समस्याओं को हल कर पा रहे थे और सहपाठियों के साथ मिल-जुल कर कार्य कर पा रहे थे। सार्थक ज्ञान को लागू कर रहे थे और अपने सीखने की रणनीति पर चिन्तन कर पा रहे थे। इससे उन्हें अपनी गति से अगले स्तर पर जाने और अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों का सह-निर्माण करने में मदद मिली।

'ओपन बुक' परीक्षा, साथियों, शिक्षकों और माता-पिता के अवलोकनों, पोर्टफ़ोलियो, फ़िल्म-सराहना और कहानी कहने के सत्रों के माध्यम से आकलन किया गया। शोध परियोजनाओं का उपयोग भी आकलन के उपकरण के रूप में किया गया था। सीखने की अपार सम्भावनाएँ खुल गईं, जो ईंट-पत्थर के बने स्कूल में इतने गहन स्तर पर शायद नहीं हो पातीं।

प्रत्येक बच्चे तक पहुँचना

वैश्विक महामारी ने विकलांग बच्चों को बहुत प्रभावित किया है। स्प्रिंगडेल्स स्कूल में विकलांग विद्यार्थियों की संख्या 400 से अधिक है। इनमें अपपठन (Dyslexia -डिस्लेक्सिया), डिस्केल्कुलिया(Dyscalculia),डिस्ग्राफ़िया (Dysgraphia), स्वलीनता (Autism-ऑटिज़्म) डाउन सिंड्रोम (Down Syndrome), प्रमस्तिष्क पक्षाघात (Cerebral Palsy- सेरेब्रल पाल्सी) और एस्परगर संलक्षण(Asparger's syndrome) जैसी कई प्रकार की समस्याएँ और अधिगम अक्षमताएँ हैं। स्कूल-परिवार की साझेदारी से उन्हें सहायता मिली। विशेष कक्षाओं, सुनियोजित हेल्पलाइन और मुख्यधारा की ऑनलाइन कक्षाओं में एकीकरण के द्वारा विकलांग बच्चों का समर्थन किया गया था। शिक्षक और माता-पिता दोनों के सामने तकनीकी जानकारी को लेकर एक समान चुनौतियाँ थीं, इसके बावजूद उन्होंने कड़ी मेहनत की।

वैश्विक महामारी के कारण, व्यावसायिक शिक्षा,स्पीच तथा व्यवहार सम्बन्धित विशेषज्ञ शिक्षक, व्यक्तिगत रूप से बच्चों से मिल नहीं पा रहे थे और इसलिए माता-पिता और शिक्षकों को कई अलग-अलग भूमिकाएँ निभानी पड़ीं। इस खाई को पाटने के लिए स्कूल के शिक्षकों ने माता-पिता को हेल्पलाइन के माध्यम से चिकित्सकों के साथ जुड़ने में सहायता की ताकि वे अपने बच्चों की मदद कर सकें।

जिन बच्चों को स्क्रीन के सामने बैठने में परेशानी या स्क्रीन इन्टॉलरेन्स होती थी, उन बच्चों की मदद के लिए माता-पिता भी उनके साथ ऑनलाइन कक्षाओं में बैठे। यह एक बड़ी चुनौती साबित हुई क्योंकि इनमें से बहुत कम बच्चे स्क्रीन के सामने बैठने के लिए तैयार या स्क्रीन रेडी थे।

बाधाएँ और समाधान

वैश्विक महामारी के तनाव के परिणामस्वरूप कई बच्चे मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी गम्भीर समस्याओं, अकेलेपन, अवसाद और दुष्चिन्ताओं से गुज़र रहे थे। यह बात प्रमस्तिष्क पक्षाघात वाले बच्चों पर विशेष रूप से लागू होती थी। भाषा सम्बन्धी विकलांगता वाले बच्चे स्थिति को समझने में होने वाली कठिनाइयों के कारण नकारात्मक रूप से प्रभावित हुए थे। कुछ परिस्थितियाँ ऐसी भी थीं जिनमें विकलांग बच्चों के साथ दुर्व्यवहार किया जा रहा था और उनकी उपेक्षा की जा रही थी। इन बच्चों का समर्थन करने के लिए विशिष्ट मनोवैज्ञानिकों और स्कूल परामर्शदाताओं द्वारा परामर्श सत्र आयोजित किए गए।

हमें इस बात का अहसास हुआ कि विकलांग विद्यार्थियों की एक नियत दिनचर्या होती है। उन्हें अपने संवेदी एकीकरण कार्यक्रम (sensory integration program) के लिए नियमित व्यावसायिक उपचारात्मक इनपुट की आवश्यकता होती है, इसलिए हमने सहायक तकनीकों की शुरुआत की, जिससे अध्ययन सामग्री तक पहुँच बढ़ गई। श्रवण दोष वाले बच्चों की मदद करने के लिए संकेत शिक्षण (sign teaching)

और स्पीच सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया।

परामर्शदाताओं ने माता-पिता को इस मुद्दे के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए उनके साथ कार्यशालाएँ आयोजित कीं। ताकि वे अपने बच्चों को घरेलू कामों में शामिल कर सकें क्योंकि इससे जीवन-कौशल के निर्माण में मदद मिलती है। विकलांग बच्चों ने बर्तन धोने, खाने की टेबल लगाने, पौधों को पानी देने, कपड़ों की तह लगाने जैसे कार्य शुरू किए जिससे उनमें ज़िम्मेदारी और भागीदारी की भावना विकसित हुई। माता-पिता के लिए व्यक्तिगत गृह-कार्यक्रम बनाए गए थे। वर्कशीट्स और व्यवहार-संशोधन से सम्बन्धित योजनाओं को उनके घर पर भेजा गया। जो माता-पिता भावनात्मक कशमकश से गुज़र रहे थे उनकी सहायता के लिए हेल्पलाइन की व्यवस्था की गई।

यह कार्य लगातार किए जाते रहे - बच्चों और माता-पिता के लिए परामर्श सत्र बनाना, बच्चों को उनकी नियमित शिक्षण कक्षाओं में ट्रैक करना और कक्षाओं के बाद कौशल-निर्माण सत्रों की सहायता से कार्य को आगे बढ़ाना तथा उपचारात्मक कार्यों में मदद करना।

प्रौद्योगिकी को मानवीय बनाना

एक स्कूल के रूप में हमने यह सुनिश्चित किया कि ऑनलाइन बिताया गया समय निष्क्रिय न होकर सक्रिय और उत्पादक हो। हमने ऑनलाइन सामग्री को मानवीय बनाने की अपनी रणनीतियों की समीक्षा की। व्यक्ति आधारित अधिगम, कक्षागत प्रक्रियाओं का अभिन्न अंग बन गया।

हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि पाठ्यक्रम की विषय-सामग्री को छोटे घटकों में कैसे विभाजित किया जाए। यह कार्य विषयों की अवधारणा-आधारित समझ के माध्यम से किया गया। बच्चों को पाठ की बजाए क्षमता-आधारित अधिगम के माध्यम से पढ़ाया गया, जिससे उन्होंने जो कुछ भी सीखा, उसकी गहरी समझ उन्हें मिली।

हमने देखा की शुरुआती कक्षाओं में पढ़ने वाले छोटे बच्चे अपने पाठों के लिए स्क्रीन समय नहीं दे पा रहे थे, इसलिए हमने एल्यूमीनियम के छोटे डिब्बों को रंगा और उनमें कई वर्कशीट्स, देशी खिलौने, ड्राइंग की सामग्री, प्ले-डो (Play Doh) और अन्य संसाधनों को रखा, जिनसे बच्चा महीने भर के लिए व्यस्त रह सके। इन डिब्बों को उनके घर भेजा गया। इसे हमने मैजिक बॉक्स नाम दिया। इससे नर्सरी और किंडरगार्टन के विद्यार्थियों को ऑफलाइन सीखने में मदद मिली। इसने विद्यार्थियों में अपनी सामग्री के प्रति स्वामित्व की भावना भी पैदा की। शिक्षक रोज़ाना बीस मिनट के लिए माता-पिता के साथ ऑनलाइन जुड़ते थे और बच्चों के लिए मैजिक बॉक्स के उपयोग के बारे में बताते थे। इस पूरी भागीदारी ने स्क्रीन-टाइम से दूर रहने और अनुभवात्मक अभ्यासों के माध्यम से माता-पिता और बच्चे के बीच सम्बन्ध बनाने में मदद की।

हमने *डिजिटल करने (doing digital)* और *डिजिटल होने (being digital)* के बीच के अन्तर को पहचाना। *डिजिटल करना* यानी विद्यार्थियों को घर से ऑनलाइन सीखने में सक्षम बनाना जबकि *डिजिटल होने* का मतलब है एक ऐसी प्रणाली का उपयोग करना जो प्रौद्योगिकी के लाभों को हमारे सामने खोले। हम तकनीकी समर्थित शिक्षण के बारे में *सोचने* से आगे बढ़े और इसकी वास्तविक क्षमता के विस्तार को समझा। इसलिए, हम बच्चे की गति, योग्यता, अनुभव, पूर्व-ज्ञान, दक्षताओं और खूबियों के आधार पर सांस्कृतिक और डिजिटल दोनों ही तरीक़ों से ख़ुद को एक विद्यार्थी-केन्द्रित अधिगम चैनल के रूप में बदल पाने में सक्षम हुए। कक्षा में पढ़ाने और साथ ही विद्यार्थियों की प्रगति के विश्लेषण के नए तरीक़ों की कल्पना की गई। शिक्षार्थियों ने एक समुदाय की तरह काम किया और अन्तःक्रियाओं का आनन्द लिया, साथ-ही-साथ उन अनुभवों का भी लाभ उठाया जो विशेष तौर पर उनके लिए निर्मित किए गए थे। शिक्षण में असमानता को डिजिटल अधिगम-तकनीकों के माध्यम से सम्बोधित किया गया था।

एक स्कूल के रूप में, हमने अपने शिक्षण और अधिगम की प्रक्रियाओं में उद्देश्य और मानवता को लागू करने की कोशिश की है क्योंकि अधिगम को बैच-प्रोसेस्ड टेस्टिंग और रैंकिंग से आगे बढ़ना चाहिए। हमारा मानना है कि हम उस परिवर्तन के इस अवसर को अनदेखा नहीं कर सकते हैं जो अगले 50 वर्षों तक हमारी शिक्षा प्रणालियों को आकार देगा। हमने सीखा कि विद्यार्थी उच्चतर चिन्तन-कौशल में महारत हासिल करते हैं क्योंकि, आज, *जो बात मायने रखती है वह यह नहीं है कि विद्यार्थी क्या जानते हैं, बल्कि यह है कि वे उस ज्ञान को कैसे लागू करते हैं।*

नवाचार

हमने शिक्षा के वर्ज़न 4.0 में जाने का प्रयास किया, जिसमें 21वीं सदी के कौशल, अधिगम का केन्द्रबिन्दु बने। हमने टेक्स्ट चैट की शुरुआत की, जो खुली चर्चाओं के साथ-साथ चली, अतः कक्षा की रुचि बनी रही। आकर्षक और सटीक पॉवर पॉइंट प्रस्तुतियाँ/स्लाइड, वीडियो बनाए गए, जो गतिविधियों पर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हैं। शिक्षकों ने सुनिश्चित किया कि सामग्री मात्रात्मक के बजाय गुणात्मक हो जो विद्यार्थियों को सार्थक जानकारी देने में मदद करे। स्क्रीन टाइम का उपयोग, विशेष रूप से एक-एक विद्यार्थी के साथ अन्तःक्रिया के लिए किया गया ताकि आक्रामक खेल, इंटरनेट ब्राउज़िंग और वीडियो देखने को रोका जा सके।

इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों की ईमानदारी को बनाए रखने के लिए शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच होने वाले सम्पर्क के घण्टों पर पुनर्विचार करके शिक्षक तथा विद्यार्थी के बीच मजबूत सम्बन्ध बनाए गए। जिन असाइनमेंट में विद्यार्थियों द्वारा नकल या बेईमानी करने की सम्भावना होती है, उन्हें फिर से जाँचा गया ताकि इस तरह के गलत अभ्यासों को कम किया जा सके। जिन प्रश्नों के आधार पर बच्चों का आकलन किया गया था, वे अनुप्रयोगों और चिन्तन पर आधारित थे न कि रटकर सीखने पर।

वैश्विक महामारी के दौरान, हमने विद्यार्थियों और शिक्षकों की आवाज़ और एजेंसी यानी उनके कर्तृत्व को सुनिश्चित करके एक मज़बूत संगठनात्मक संरचना विकसित की है। हमने माता-पिता और समुदाय के साथ रिश्तों को मज़बूत किया है, व्यावसायिक विकास एवं परिवर्तनकारी अधिगम के लिए अवसरों का सृजन किया और समावेशन व विविधता की भावना को विकसित किया है। हमारे शैक्षणिक अभ्यास स्थायित्व और भलाई का समर्थन करने वाले थे और वे सहयोगात्मक रणनीतियों से प्रभावित थे। हमने समग्र दृष्टिकोण अपनाया था और उसमें अन्वेषण आधारित रणनीतियों (enquiry based strategies) तथा विद्यार्थी केन्द्रित विभेदित अधिगम को लेकर प्रतिबद्धता थी।

स्कूल और समुदाय ने ऐसे अभ्यासों का प्रदर्शन किया जिन्होंने विद्यार्थियों और शिक्षकों की भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक भलाई का विकास किया। हमने वर्चुअल (आभासी) रूप से स्वास्थ्य संवर्धन कार्यक्रमों, प्रार्थना सभाओं, अवलोकनों, स्मृति सभाओं का आयोजन किया एवं नृत्य, संगीत, कला, रंगमंच, खेल के माध्यम से सभी त्योहारों को मनाया। कक्षाओं में प्रभावी सम्प्रेषण निर्मित कर मानव स्वास्थ्य व प्रकृति, ख़ुशी व भलाई के आपसी सम्बन्ध को ख़ोजा। कविता पाठ, स्टैंड-अप कॉमिक शो, भाषण, वाद-विवाद, पर्यावरण दिवस, व्यक्तित्व और वक्तृता-विकास के सत्र भी आयोजित किए गए।

हर बच्चा महत्त्वपूर्ण है

वैश्विक महामारी जारी रही और हम बिना रुके और अपरिवर्तनीय रूप से एक अलग प्रकार के स्कूल बन गए। शिक्षण और अधिगम को पूरी तरह से बदल दिया गया है। ऑनलाइन कक्षाओं ने विद्यार्थियों को व्यक्ति आधारित अधिगम का अनुभव दिया है।

अपने समुदाय में सुविधाप्राप्त और कम सुविधाप्राप्त पृष्ठभूमि वाले लोगों के बीच कोई भी भेदभाव न आने पाए, इसके लिए हमने गुणवत्ता की अपनी परिभाषा को लगातार संशोधित किया और समता एवं अवसर का एक आदर्श निर्मित किया।

यदि स्कूल, प्रौद्योगिकी को व्यक्ति आधारित बनाए और समयोचित फ़ीडबैक दे तो यह प्रत्येक विद्यार्थी के सामर्थ्य को बढ़ाती है। यह उन विद्यार्थियों की पहचान करने में मदद करती है जिन्हें सीखने में परेशानी हो रही है और जिन पर अतिरिक्त ध्यान देने की आवश्यकता है। हमारे आकलन का मॉडल विद्यार्थी-केन्द्रित है जिसमें सामाजिक और भावनात्मक भलाई अनिवार्य रूप से शामिल है और जो शिक्षकों को, विद्यार्थियों की रुचि व सीखने की इच्छा को समझने में मदद करता है। भविष्य पर पुनर्विचार करके, साहस और प्रतिबद्धता के माध्यम से हमने अपने स्कूल को एक बड़े पारिस्थितिकी तंत्र में बदल दिया है जो मानवीय भी है और शिक्षाप्रद भी।

अमिता वट्टल स्प्रिंगडेल्स स्कूल, पूसा रोड और कीर्ति नगर, नई दिल्ली की प्राचार्या; स्प्रिंगडेल्स स्कूल, जयपुर की प्रबन्धक और स्प्रिंगडेल्स स्कूल, दुबई की संस्थापक प्राचार्या व कार्यकारी सदस्य और ग्लोबल इंक्लूसिव एजुकेशन नेटवर्क (GIEN) की अध्यक्ष हैं। उन्होंने शिक्षा, रचनात्मक कला, विशेष शिक्षा, कम्यूनिकेटिव इंग्लिश, स्ट्रीट थियेटर, महिलाओं की शिक्षा, शान्ति अध्ययन और पाठ्यचर्या विकास के क्षेत्र में चार दशकों से भी अधिक समय तक काम किया है। कई अन्य पुरस्कारों के साथ वे राष्ट्रपति के हाथों दिया जाने वाला प्रतिष्ठित राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार भी प्राप्त कर चुकी हैं। उनसे **ameetam@gmail.com** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल